अक्टूबर 2017 मूल्य 15 रुपये

रूपरेखा

सदाचार ~ सद्विचार ~ सत्तसंस्कार

खत्म हो गए जन्म-मरण के सिलसिले
महावीर-निर्वाणोत्सव के घर-घर दीप जले

रूपरेखा

सदाचार ~ सद्विचार ~ सत्संस्कार

मार्गदर्शन :
पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी

संयोजना :
साध्वी कनकलता
साध्वी वसुमती

परामर्शक :
श्रीमती मंजुबाई जैन

प्रबंध संपादक :
अरुण कुमार पाण्डेय

सम्पादक :
श्रीमती निर्मला पुगलिया

वार्षिक शुल्क : 150 रुपये
आजीवन शुल्क : 3000 रुपये

प्रकाशक
अरूण तिवारी
मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.)
पोस्ट बॉक्स नं. : 3240
सराय काले खाँ बस टर्मिनल के सामने,
नई दिल्ली - 110013
फोन नं. : 26345550, 26821348
Website : www.rooprekha.com
E-mail : contact@manavmandir.info

इस अंक में

धर्म और विज्ञान

विज्ञान पदार्थ की पकड़ है, पदार्थ की खोज है।

धर्म आत्मा की खोज है, अपदार्थ की, नान-मैटर की खोज है।

ये दोनों खोज अलग है। इन दोनों खोज के आयाम अलग हैं। इन दोनों खोज की विधियां अलग हैं।

अगर विज्ञान की खोज करनी है तो प्रयोगशाला में जाओ। और अगर धर्म की खोज करनी है तो अपने भीतर जाओ। 03

हिंसा वैचारिक हो या शारीरिक पहले खुद को शिकार बनाती है

हमें यह समझना होगा कि वैचारिक आक्रामकता हो या शारीरिक, पहले वह खुद को चपेट में लेती है फिर दूसरों को निशाना बनाती है। हम यह सोचकर खुश होते हैं कि उसे मजा चखा दिया लेकिन यह भूल जाते हैं कि इसमें हमारा कितना नुकसान हुआ। हमने अपना विवेक और धैर्य खोया, मन की शान्ति और चेतना खोयी, संबंध और विश्वास खोया। सबसे बड़ी बात यह कि हमने मनुष्यता खोयी। 05

सम्यक् आचरण

आचारण का अर्थ है सिद्धान्त, कथन और क्रिया की एकरूपता। जिस व्यक्ति का सिद्धान्त कुछ और, प्रतिपादन उससे विपरीत और व्यवहार सर्वथा विदिशागामी हो उसके जीवन में बहुत बड़ी विसंगति होती है। ऐसी विसंगति स्वयं का तो अहित करती ही है, दूसरों में भी अनास्था पैदा करती है। जो व्यक्ति कहता कुछ और करता कुछ और है, उसका विश्वास कौन करे? 07

सुख-समृद्धि के प्रतीक हैं मांगलिक चिन्ह

घर के मुख्य द्वार पर मांगलिक चिन्हों को लगाने से घर में नकारात्मक ऊर्जा प्रवेश नहीं करती है। इससे घर को बुरी नजर नहीं लगती और घर के आसपास नकारात्मक ऊर्जा भी नष्ट होती है, इसलिए मांगलिक चिन्हों की परंपराओं का निर्वाह प्राचीन काल से होता आ रहा है। 16

संत-वाणी

पानी बाढो नाव में, घर में बाढो दाम।
दोनों हाथ उलीचिये, यही सयानो काम।।

बोध-कथा

सबसे बड़ा भक्त

एक बार अर्जुन को अहंकार हो गया कि वही भगवान के सबसे बड़े भक्त हैं। अर्जुन के अहंकार को कृष्ण समझ गए। एक दिन वह अर्जुन को अपने साथ घुमाने ले गए। रास्ते में उनकी मुलाकात एक गरीब ब्राह्मण से हुई। उसका व्यवहार थोड़ा विचित्र था। वह सूखी घास खा रहा था और उसकी कमर से तलवार लटक रही थी। अर्जुन ने उससे पूछा– 'आप तो अहिंसा के पुजारी हैं। जीव हिंसा के भय से सूखी घास खाकर अपना गुजारा करते हैं। लेकिन फिर हिंसा का यह उपकरण तलवार क्यों आपके साथ है?' ब्राह्मण ने जवाब दिया– 'मैं कुछ लोगों को दंडित करना चाहता हूं।' 'आपके शत्रु कौन हैं?' अर्जुन ने जिज्ञासा जाहिर की। ब्राह्मण ने कहा– 'मेरे चार शत्रु हैं। पहले तो नारद, जो मेरे प्रभु को आराम नहीं करने देते, सदा भजन-कीर्तन कर उन्हें जगाए रखते हैं। फिर द्रौपदी है, जिसने मेरे प्रभु को ठीक उसी समय पुकारा, जब वह भोजन करने बैठे थे। उन्हें तत्काल खाना छोड़ पांडवों को दुर्वासा ऋषि के शाप से बचाने जाना पड़ा। उसकी धृष्टता तो देखिए। उसने मेरे भगवान को जूठा खाना खिलाया। आपका तीसरा शत्रु कौन है? अर्जुन ने पूछा। वह है हृदयहीन प्रह्लाद। उस निर्दयी ने मेरे प्रभु को गरम तेल के कड़ाह में प्रविष्ट कराया, हाथी के पैरों तले कुचलवाया और अंत में खंभें से प्रकट होने के लिए विवश किया। और चौथा शत्रु है अर्जुन। उसकी दुष्टता देखिए। उसने मेरे भगवान को अपना सारथी बना डाला। उसे भगवान की असुविधा का तनिक भी ध्यान नहीं रहा। कितना कष्ट हुआ होगा मेरे प्रभु को।'

यह कहते ही ब्राह्मण की आंखों में आंसू आ गए। यह देख अर्जुन का घमंड चूर-चूर हो गया। उसने भगवान कृष्ण से क्षमा मांगते हुए कहा– 'मान गया प्रभु, इस संसार में न जाने आपके कितने तरह के भक्त हैं। मैं तो कुछ भी नहीं हूं।'

धर्म और विज्ञान

विज्ञान है- परम्परा समूह की।
धर्म है- निजी अनुभव व्यक्ति का।

विज्ञान प्रमाण दे सकता है, धर्म प्रमाण नहीं दे सकता। विज्ञान कह सकता है, सौ डिग्री पर पानी गर्म होता है? हजार लोगों के सामने पानी गर्म करके बताया जा सकता है, सौ डिग्री पर पानी गर्म हो जाएगा, प्रमाण हो गया। धर्म जिन बातों की चर्चा करता है, वह किसी के सामने भी प्रकट करके नहीं बताई जा सकती। जब तक कि वह दूसरा आदमी अपने भीतर जाने को राजी न हो। और वह भी भीतर चला जाए, तो किसी दिन दूसरे के सामने प्रमाण नहीं दे सकेगा।

धर्म के पास कोई प्रमाण नहीं है, सिर्फ अनुभव है।
विज्ञान के पास प्रमाण है, अनुभव कुछ भी नहीं।

तो अगर आपको प्रमाण इकट्ठे करने हों, तर्क इकट्ठे करने हों, तो विज्ञान उचित है। और अगर आपको जीवन का अनुभव पाना हो, जीवन के रहस्य में उतरना हो, तो धर्म की जरूरत है। और धर्म और विज्ञान पृथ्वी पर सदा बने रहेंगे, क्योंकि उनके आयाम अलग हैं, उनकी दिशाएं अलग हैं- जैसे आंख देखती है और कान सुनता है। अगर आंख सुनने की कोशिश करे तो पागल हो जाएगी। और अगर कान देखने की कोशिश करे तो पागल हो जाएगा। उनके आयाम अलग हैं, उनके डायमेन्शन अलग हैं।

विज्ञान और धर्म का क्षेत्र ही अलग है। वे कहीं एक दूसरे को ओवर-लैप नहीं करते, एक दूसरे के ऊपर नहीं आते। अलग-अलग हैं। इसलिए कोई झगड़ा भी नहीं है, कोई कलह भी नहीं है। न तो विज्ञान धर्म को गलत सिद्ध कर सकता है और न सही। और न धर्म विज्ञान को गलत सिद्ध कर सकता है और न सही। उनका कोई सम्बन्ध ही नहीं है। उनके यात्रा-पथ अलग है, उनका कहीं मिलना नहीं होता।

इसलिए दोनों की भाषा को अलग रखने की कोशिश करें, तो आपके जीवन में सुविधा बनेगी। जहां पदार्थ की बात सोचते हों, वहां विज्ञान की सुनें और जहां चेतना की बात सोचते हों, वहां विज्ञान की बिल्कुल मत सुनें, वहां धर्म की सुनें। और इन दोनों को मिलाएं मत। इन दोनों को आपस में गड़बड़ मत करें। अन्यथा आपका जीवन एक कन्फ्यूजन हो जाएगा।

विज्ञान पदार्थ की पकड़ है, पदार्थ की खोज है।

धर्म आत्मा की खोज है, अपदार्थ की, नान-मैटर की खोज है।

ये दोनों खोज अलग है। इन दोनों खोज के आयाम अलग हैं। इन दोनों खोज की विधियां अलग हैं।

अगर विज्ञान की खोज करनी है तो प्रयोगशाला में जाओ।
और अगर धर्म की खोज करनी है तो अपने भीतर जाओ।

प्रस्तुति : निर्मला पुगलिया

पूज्य गुरुदेव के प्रवचन-सारांश

○ रुचि आनंद

हिंसा वैचारिक हो या शारीरिक पहले खुद को शिकार बनाती है

जैन पुराणों का एक प्रसंग है कि एक बार भगवान महावीर के मुख से नरक गमन की भविष्यवाणी सुनकर मगधपति बिंबसार बहुत विचलित हो उठे। सम्राट ने चिंतातुर स्वर में नरक-बंधन को टालने का उपाय पूछा। महावीर ने कहा- तुम्हारे नगर का कालसौरिक कसाई एक दिन के लिए अगर भैंसों का वध न करे तो नरक बंधन टल जाएगा। बिंबसार ने कालसौरिक को बुलाकर उससे आग्रह किया, प्रलोभन भी दिया लेकिन वह नहीं माना। उसने वंश और परंपरा की दुहाई देकर आग्रह को मानने से नकार दिया। सम्राट ने झुंझलाते हुए उसे एक दिन के लिए अंधकूप में छोड़ दिया कि अब वह कैसे करेगा वध?

दूसरे दिन बिम्बसार खुशी-खुशी महावीर के पास पहुंचे और कहा कि कालक को वध करने से रोक दिया। लेकिन महावीर ने उनसे असहमति व्यक्त की। यह रहस्य सामने आया कि कालक ने कुएं में आसपास की मिट्टी से भैंसा बनाया और अपने हाथ को खडग बनाकर तबतक वध जारी रखा, जबतक संख्या पूरी नहीं हो गयी। इसे अगर अहिंसा की परिभाषा की कसौटी पर कसें तो उसने हिंसा का आचरण नहीं किया लेकिन महावीर कहते हैं, उसने हिंसा की। घटना के स्तर पर चाहे उसने किसी का वध न किया हो किन्तु चित्त की भूमिका पर वह वध कर चुका है। किसी भी शासन के लिए कालक एक प्रतीक भर है कि हिंसक-धारणा कैसे जीवित रहती है।

यदि चित्त में हिंसा है तो बाहर अहिंसक होते हुए भी हिंसक हैं। इसे आज हो रही घटनाओं और विवादों-बहसों के सन्दर्भ में देखें तो स्पष्ट हो जाएगा। आदमी पहले मन के स्तर पर किसी से नफरत करता है, फिर उसे घेरकर गिराने की

साजिश रचता है। जब उससे भी बात नहीं बनती है तो आक्रामक रुख अपना लेता है। यही वजह है कि आज आदमी एक-दूसरे को बर्दाश्त करने के लिए तैयार नहीं है। यही वह वृत्ति है जो समाज का न केवल माहौल खराब कर रही है बल्कि बांट भी रही है। हमें यह समझना होगा कि वैचारिक आक्रामकता हो या शारीरिक, पहले वह खुद को चपेट में लेती है फिर दूसरों को निशाना बनाती है। हम यह सोचकर खुश होते हैं कि उसे मजा चखा दिया लेकिन यह भूल जाते हैं कि इसमें हमारा कितना नुकसान हुआ। हमने अपना विवेक और धैर्य खोया, मन की शान्ति और चेतना खोयी, संबंध और विश्वास खोया। सबसे बड़ी बात यह कि हमने मनुष्यता खोयी।

इसलिए महावीर मनुष्यता को स्वभाव बनाने का संकेत करते हैं। वे तो यहां तक कह जाते हैं कि 'जिसे तू मारना चाहता है, वह तू ही है। जिसे तू संताप-परिताप देना चाहता है, वह तू ही है। जिसके तू प्राण लेना चाहता है वह तू ही है।' जिस दिन इसे हमने समझ लिया, गलत काम करने से बच जाएंगे अन्यथा कु-प्रवृत्ति के शिकार हो जाएंगे।

<u>माफी मांगना या माफ करना औरों पर नहीं, अपने पर ही उपकार है</u>

भगवान् बुद्ध के जीवन का एक अनोखा प्रसंग है। वे जहां विराजमान थे, एक नौजवान तेजी से भागता हुआ उनके पास आया। उसने जोर से झटकते हुए एक जूते को इधर फेंका और दूसरे को उधर। धक्का मारकर दरवाजे को खोला और बैठते हुए कहा, वह बहुत व्यस्त है और मुश्किल से समय निकालकर यहां आया है ताकि कुछ उपदेश ग्रहण कर सके।

बुद्ध ने शांत-चित्त से कहा कि जाओ, पहले अपने जूतों से क्षमा मांगो, उनको करीने से रखो, फिर इन दरवाजों से क्षमा मांगो और आदर के साथ उन्हें खोलकर अन्दर आओ। जीवन में किसी को छोटा समझकर उसका अपमान मत करो, तुम्हें मेरा यही उपदेश है।

कुछ लोगों को यह उपदेश अटपटा लग सकता है कि जूतों और दरवाजों से क्षमा क्यों? लेकिन यह बात अपने आप में गहरा अर्थ लिए हुए है। हर छोटी से छोटी चीज अपने में महत्वपूर्ण होती है। जूता उतना ही मूल्यवान है जितना मुकुट। हर किसी की अपनी-अपनी जगह और उपयोगिता है। किसी को कम आंकना, उसका असम्मान करना है। यह आपके व्यवहार और सोच पर निर्भर करता है कि आप किस दिशा में जाना चाहते हैं। अहंकार के साथ जीना चाहते हैं या क्षमा के साथ आगे बढना चाहते हैं।

बुद्ध का सीधा संकेत है, जब हम क्षमा मांगते हैं या क्षमा करते हैं तो उसके साथ अपना अहंकार भी विसर्जित करते हैं। हालांकि यह एक मुश्किल काम है लेकिन जब कर लेते हैं तब यह अहसास होता है कि हमने किसी और पर नहीं अपने पर ही उपकार किया है। यह आत्मग्लानि से मुक्ति का सबसे बड़ा उपाय है। तब आपके अन्दर किसी के प्रति नफरत नहीं रह जाती है। आप सबके अपने बन जाते हैं। महसूस कर देखें, जब आप किसी को माफ करते हैं तब आपकी मनःस्थिति में कितना बदलाव आ जाता है। आप खुशी से भर जाते हैं और वह क्षण अहम हो जाता है। हमने बात-बात पर सॉरी कहना क्यों सीख लिया है। वह सामने वालों को आभास करा देता है कि आपने अपनी गलती पहले ही मान ली है। इससे उनके भाव में परिवर्तन आ जाता है। आप उनके और वह आपके करीब हो जाता है। इसमें किसी का कुछ खर्च भी नहीं होता।

हमें इस सत्य को स्वीकार करना चाहिए कि क्षमा करना शक्तिशाली लोगों का गुण है। इसलिए हेनरी डब्लू बीयर मनुष्यता की पहचान बताते हुए कहते हैं कि अपने पास रखे तीन संसाधनों को मत भूलिए, प्रेम, प्रार्थना और क्षमा। हमारी परम्परा में क्षमा को पांच कर्तव्यों में से एक माना गया है। कोशिश यह होनी चाहिए कि हम किसी को शिकायत का मौका ही न दें वरना संबंध खोते चले जायेंगे और हम अकेले होने के लिए विवश हो जायेंगे। किसी ने सही कहा है कि क्षमा प्रेम का अंतिम रूप है।

कविता

○ आचार्यश्री रूपचन्द

हर रोशनी को घेरे हुए अँधेरा होता है,
साधु के वेश में छिपा हुआ लुटेरा होता है,
सत्य सरल होते हुए भी, होता है मुश्किल
कि सत्य पर सौ-सौ झूठ का घेरा होता है।

सम्यक् आचरण

○ संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री

आचारण का अर्थ है सिद्धान्त, कथन और क्रिया की एकरूपता। जिस व्यक्ति का सिद्धान्त कुछ और, प्रतिपादन उससे विपरीत और व्यवहार सर्वथा विदिशागामी हो उसके जीवन में बहुत बड़ी विसंगति होती है।

ऐसी विसंगति स्वयं का तो अहित करती ही है, दूसरों में भी अनास्था पैदा करती है। जो व्यक्ति कहता कुछ और करता कुछ और है, उसका विश्वास कौन करे? पंडितजी के खाने और बताने के बैंगन अलग-अलग थे, इसलिए शिष्यों पर उनका असर नहीं हुआ।

पंडितजी प्रवचन कर रहे थे। श्रोताओं को प्रतिबोध देते हुए पंडितजी बोले- भाइयो एवं बहनो! बैंगन कभी मत खाना, बैंगन एक विदेशी शाक है। यह बहुबीजा है। आप लोगों ने देखा नहीं? इसमें कोरे बीज ही बीज होते हैं। इससे सदा परहेज करना।

श्रोता लोगों ने पंडित जी का प्रवचन सुना और बैंगन के प्रति अरुचि पैदा हो गई। बहुत से लोगों ने बैंगन खाने का प्रत्याख्यान कर दिया।

एक दिन पंडित जी की बीबी मालिन के यहां बैंगन खरीद रही थी। संयोगवश एक बुढ़िया ने देख लिया जो पंडितजी का नियमित प्रवचन सुनती थी। उसने सोचा- पंडितजी तो बैंगन का निषेध करते हैं और इन्हीं के घर बैंगन जाते हैं। फिर सोचा- कोई मेहमान आया होगा, जिसके लिए ये खरीद रही होंगी।

दूसरे और तीसरे दिन जब उस बुढ़िया ने पंडितजी को बैंगन खरीदते देखा तो उसने सोचा- डॉक्टर की दवा घरवालों पर नहीं लगती, शायद पंडितजी का उपदेश इन पर असर नहीं करता। बुढ़िया के हृदय ने संशय-रेखा खिंच गई और एक दिन वह खाना खाने के समय पंडितजी के घर पर गई। उसने देखा कि पंडितजी कटोरा भरकर बैंगन का शाक खा रहे हैं। बुढ़िया ने पूछा- पंडितजी, यह क्या? पंडितजी

बोले- मांजी! प्रवचन के बैंगन दूसरे होते हैं और खाने के दूसरे। बुढ़िया ने पंडितजी की दुर्बलता को झांपते हुए विदा ली। लेकिन उस दिन से पंडितजी के प्रति लोगों की जो आस्था थी, वह सदा के लिए खत्म हो गई। कथनी और करनी की विसंगति का यही परिणाम होता है।

कथनी और करनी की विषमता जीवन की सबसे बड़ी विसंगति है।

मान्यता ओर प्रतिपादन कितना ही अच्छा हो, जब तक जीवन के व्यवहारों में वे बातें अंकित नहीं होतीं, कोई परिणाम आने वाला नहीं।

खाना बहुत स्वादिष्ट है। खाद्य की समुचित जानकारी भी है। खाद्य-पदार्थ सम्मुख पड़े हैं, लेकिन ग्रहण किए बिना भूख शान्त नहीं होती।

वैद्य बड़ा जानकार है। पास में विशुद्ध और मूल्यवान दवाइयों की पेटी भी है, किन्तु रोगी पर उनका प्रयोग नहीं होता है। क्या आशा की जा सकती है कि रोग मिट जाएगा?

एक किसान कृषि में दक्ष है। पास में उर्वर भूमि है और श्रेष्ठ जाति के बीज भी। प्रकृति का भी जलवायु, आतप आदि के रूप में पूरा सहयोग है। फिर भी बीज बोए नहीं गए। क्या फसल लहलहाएगी?

इसी तरह पुस्तकीय आदर्शों को जीवनगत किए बिना जीवन का निर्माण नहीं होता। जीवन-व्यवहारों का जहां तक प्रश्न है, एक और जटिलता है। जीवन का बहुरूपियापन जो है, वह बड़ा खतरनाक है। दूकान का रूप दूसरा, घर का रूप दूसरा, ऑफिस का कोई और ही रूप है। दोस्तों के साथ किसी और तरह का व्यवहार, नौकर-मुनीमों के प्रति दूसरी तरह की भावनाएं। कोर्ट-कचहरी का रूप कुछ और ही तरह का है। धर्म-स्थानों, पूजा-गृहों, मंदिरों और सभा-मीटिगों का रूप सर्वथा ही दूसरा है।

एक ही व्यक्ति को भिन्न-भिन्न स्थानों पर भिन्न-भिन्न रूप में देखकर किसी को यह विश्वास नहीं होता है कि यह एक ही आदमी है। कहीं पर तो वह भगवान महावीर-सा समताधारी बन जाता है ओर कहीं पर वह व्यक्ति काल-सौकरिक कसाई से बढ़कर क्रूर बन जाता है। क्या कभी महावीर की समता में काल-सौकरिक की क्रूरता संभव है? यह सर्वथा धोखा है।

आज के इन्सान के इस दोहरे रूप ने, इस विचार-व्यवहार की विसंगति ने भगवान और इन्सान को ही नहीं ठगा, अपने आपको भी धोखा दिया है।

आज के मनुष्य पर किसी का विश्वास नहीं है। मनुष्य तो मनुष्य का विश्वास करे ही क्या, पशु-पक्षी तक मानव पर विश्वास करने कि लिए राजी नहीं हैं।

एक खूंखार शेर का फिर भी विश्वास

किया जा सकता है क्योंकि वह बाहर और भीतर एक-रूप है। किन्तु एक आदमी का विश्वास नहीं किया जा सकता क्योंकि वह धर्म-स्थान पर तो साधु बनकर बैठता है और दुकान पर आकर बन्दर वाला न्याय करता है।

यह आज का ज्वलंत प्रश्न है कि जानते हुए भी जीवन-व्यवहार पवित्र क्यों नहीं बन पाता, इसका कारण क्या है?

इसका कारण व्यक्ति के भीतर रहा हुआ ममकार और अहंकार है। व्यक्ति जितने भी पाप करता है ममकार और अहंकार की प्रेरणा से ही करता है।

ममकार और आसक्ति, अहंकार और वासना- ये चार तत्त्व यदि निर्मूल हो जाते हैं या फिर कषाय क्षीण हो जाता है, तब जीवन में विसंगति का कोई प्रश्न ही नहीं रहता। फिर वहां परम समता, परम मध्यस्थ भाव का विकास हो जाता है।

व्यक्ति जो कुछ करता है, तटस्थ द्रष्टा के रूप में करता है। जिसमें वह लिप्त नहीं होता, ऐसा आचरण ही वस्तुतः सम्यक् आचरण हो सकता है। वह आचरण अणुव्रतों की साधना से भी घटित हो सकता है और महाव्रतों की साधना से भी फलित हो सकता है। पर होगा तभी जब भावना की पुट लगेगी।

'महाव्रतादीनां सम्यक् आचरणं सम्यक् चारित्रम्'

महाव्रत और अणुव्रतों के सम्यक् आचरण को ही सम्यक् चारित्र कहा गया है।

कविता

आलोक पर्व

आलोक पर्व मंगल हो
चीर धरा का अंधियारा,
जन-गण-मन उज्जवल हो
आलोक पर्व मंगल हो।

हर्ष उमंगों से चहका हो
सुरभित हर घर-आंगन,
नयनों में उतरा महका हो
लावण्य लिए यह आनन।

अज्ञान तिमिर का सर्वनाश हो
प्रफुल्लित हृदय कमल हो,
संस्कृति की पावन धारा
बहती फिर कल-कल हो।

प्रकृति कहीं झिलमिल चूनर में
उतरे पहन के गहना हों,
ऋद्धि-सिद्धि, श्री सुषमा में
शहद भरा झरना हो।

हंस अकेला

{उपन्यास-शैली में आचार्यश्री रूपचन्द्र की जीवन-गाथा}

○ डॉ. विनीता गुप्ता

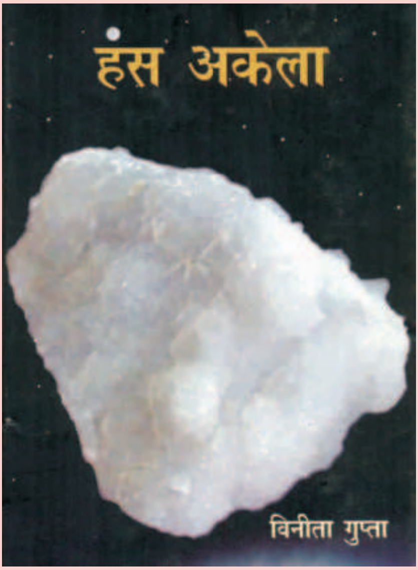

गतांक से आगे-

सितम्बर का अन्तिम सप्ताह था। आसमान पानी बरसा कर धुल चुका था। हवा में उमस बाकी थी। इस चातुर्मास में आचार्यश्री के प्रवास से पूरे सरदारहशहर में एक अलग ही रौनक थी। रोज की तरह प्रातः दिनचर्या की शुरूआत जयचंदलाल ने गौशाला से की। वहां से सीधे मंत्री मुनि के पास जाने का क्रम आज भी पहले की तरह रहा। नब्बे वर्षीय मंत्री मुनि की सेवा करते हुए उन्हें सुख अनुभव होता था। उनके साथ चर्चा में जीवन का सार मिलता था। मंत्री मुनि जयचंदलाल को सिंघी कहकर बुलाते थे। आज वह स्वयं ही रूपा की चर्चा छेड़ बैठे-

'सिंघी, रूपा के बारे में तू क्या सोचता है?'

'मुनि जी रूपा बच्चा है। मुनि दीक्षा लेने की जिद ठाने बैठा है। आप तो...' जयचंदलाल की बात बीच में ही रोकते हुए मंत्री मुनि बोले- 'तो इसमें बुराई क्या है? मैं उसका मन पढ़ चुका हूँ।'

'मुनि जी, अभी वह भावुकता में बहकर दीक्षा के लिए जिद कर रहा है। उसे जीवन की कठिनाइयों और व्रत-नियमों के बारे में कुछ नहीं मालूम। मुझे संदेह है कि वह नियमों का पालन कर पाएगा। कल को वह अपने मार्ग से भटका और फिर गृहस्थ जीवन की ओर लौटा तो ठीक नहीं होगा।' जयचंदलाल जैसे अपने मन का सारा गुबार निकाल देना चाहते थे।

'सिंघी, तू इतना क्यों सोचता है। रूपा के लिए इतनी आशंकाएं मत पाल। देख, आज यह जिस सिंह-वृत्ति से दीक्षा लेने की बात कर रहा है, यही सिंह-वृत्ति उसे संन्यास के पथ पर आगे तक ले जाएगी। यह बहुत ऊंचे दर्जे का संत बनेगा। तू मेरी

बात मान इसे दीक्षा की अनुमति दे दे। इसकी नियति और वृत्तियां आज नहीं तो कल उसी मार्ग पर ले जाएंगी। बस अब इस विषय पर ज्यादा सोचना बंद कर दे और दीक्षा की तैयारी शुरू कर।'

मंत्री मुनि के निर्देश को टालना जयचंदलाल के लिए संभव नहीं था।

x x x

जयचंदलाल रूपा की मुनि-दीक्षा के लिए मन बना चुके थे। जोर-शोर से तैयारियां शुरू हो गईं थीं। अब रूपा के संन्यास-जीवन में प्रवेश के मार्ग में कोई बाधा नहीं थी। सब राजी हो गए। अवरोध का सिर्फ एक दीया भी टिमटिमा रहा था, वह था बडे भाई शुभकरण के मन में। जयचंदलाल और घर के बाकी सदस्यों के आगे उसका कोई विशेष महत्व नहीं था। लेकिन उसका अस्तित्वतो अब भी बरकरार था।

x x x

रूपा का मन मुनि जीवन में प्रवेश की कल्पना साकार होते देख पुलक से भर गया था। उस जीवन में प्रवेश की सीढ़ी का पहला पायदान था कि स्वयं रूपा और उसके परिवार के लोग आचार्य तुलसी के समक्ष रूपा की दीक्षा के लिए निवेदन करें।

सितम्बर का महीना अपने अंतिम पड़ाव पर था। गधैया जी के नोहरे में रोज ही हजारों श्रावक-श्राविकाओं का ताँता लगा रहता। आचार्य तुलसी की वाणी का अमृत हर कोई चाहता था। इन श्रावक-श्राविकाओं में बालक रूपा भी पिछले कई दिनों से शामिल हो रहा था। उस दिन प्रवचन समाप्ति के बाद वह मुनि सोहनलाल के पास पहुँचा। उसके मुखमंडल पर एक संतोषमयी आभा विराजमान थी-

'आ रूपा बैठ। मैं प्रसन्न हूँ कि तेरे घर के लोग राजी हो गये। अब तेरे मार्ग में कोई अवरोध नहीं है।' मुनि सोहनलाल ने रूपा को बैठने के लिए कहा।

'मुनि जी, अब मैं पिता जी, दादा जी आदि के साथ आचार्यश्री के समक्ष दीक्षा की अर्जी कर दूँगा। मुनि जी मैं चाहता हूं कि यह अर्जी आम अर्जियों से कुछ अलग हो।' रूपा ने मन की बात कही।

बालक रूपा की प्रतिभा से मुनि जी गहराई से परिचित थे। पूछने लगे-

'कुछ अलग कैसे?'

'अगर मैं गा-गाकर आचार्यश्री को अपनी निवेदन रखूं तो कैसा रहे?' रूपा ने अपनी मंशा प्रकट की।

'हाँ, तू गाता तो बहुत अच्छा है। इसमें क्या बुराई है?'

'लेकिन मुनि जी मैं गाऊंगा क्या? आप कोई गीत लिख दीजिए। मैं उसी को गाऊंगा।' रूपा मुनि सोहनलाल के स्वर और शब्द- दोनों पर मुग्ध था। एक प्रकार से वह रूपा की प्रेरणा, और आदर्श थे। पुलक भरे बाल-मुख को पढ़ते हुए मुनि

सोहनलाल के भीतर का कवि जागने लगा। उन्होंने रूपा से कहा- 'अच्छा ठीक है रूपा अब जाओ। मैं देखता हूं। अगर गीत जैसा कुछ बन पड़ा तो।'

प्रणाम कर रूपा वहां से चला गया।

मुनि सोहनलाल के कवि-मन के सामने चुनौती आकार लेने लगी। भीतर एक याचक जन्म ले चुका था। देर रात तक मंथन के बाद भोर में कागज पर उन्होंने कुछ उतार लिया था। एक गीत जन्म ले चुका था। यह गीत याचक का गीत था।

अगले दिन प्रवचन के बाद सभी संत और साध्वियां अपनी दिनचर्या में जुट गए। रूपा मुनि सोहनलाल के पास बैठा रहा इस आशा में कि आज वे उसकी झोली में अवश्य कुछ डालेंगे। उसे गीत मिल जाएगा। दोनों के बीच मुख से कोई संवाद नहीं हुआ। मन से मन की बात हुई। मुनि जी ने कागज का एक पुर्जा रूपा को थमा दिया। रूपा ने मुनि जी को प्रणाम किया और पुर्जे को बाँचने लगा-

'द्वारे तुम्हारे पै याचक है आया...'

दो पंक्तियां ही पढ़ी थीं कि मुनि जी ने हाथ से इशारे से उसे रोक दिया।

'ऐसे नहीं, गाकर बोल रूपा।' उन्होनें शब्दों के साथ-साथ गीत के स्वरों से भी रूपा का परिचय कराया। रूपा एक-एक शब्द और स्वर को आत्मसात् कर रहा था। गायन की प्रतिभा तो उसके भीतर थी ही...

x x x

घर लौटा तो सीधा अपने कमरे में जाकर मनन करने लगा। कैसे वह इस गीत को आचार्यश्री के सामने प्रस्तुत करते हुए दीक्षा के लिए याचना करेगा। मंथन करते-करते उसके मन में एक और विचार उमड़ा कि क्यों न वह एक झोली लेकर आचार्यश्री के सामने दीक्षा की भिक्षा माँगे? विचार करते ही वह उठा और माँ के पास गया। माँ से सफेद रंग की एक झोली बनाने के लिए कहा।

पाँची देवी अब घर में दो दिन के मेहमान अपने बेटे रूपा की कोई बात टालना नहीं चाहती थीं। उनके भीतर रूपा से बिछुड़ने की प्रत्यक्षतः कोई पीड़ा नहीं थी। वे अपने पुत्र को अलौकिक मार्ग पर जाते हुए देख रही थीं। उन्होंने रूपा से ही कहा- 'जा, दुकान से आधा गज सफेद रंग का कपड़ा ले आ।'

रूपा तेज कदमों से गया और कपड़ा लेकर उल्टे पाँव लौटा। 'माँ, देखो ये ठीक है...।' रूपा ने माँ से पूछा। पाँची देवी ने इशारे से 'हाँ' कह दिया। रूपा फिर अपने कमरे में आ गया और खिड़की से आकाश को ताकने लगा। उसे लग रहा था जैसे पूरा आकाश उसकी झोली में समा गया है और हजारों पतंगें उसमें अठखेलियां कर रही हैं। अगले दिन उसकी दीक्षा की अर्जी लगने वाली थी।

x x x

अगले दिन रोज की तरह जयचंदलाल सुबह गौशाला के लिए निकले। रूपा को उन्होंने साथ ले लिया। रूपा उनसे पहले ही जाग चुका था। उनका रूपा से कोई बात करने का मन नहीं था। दोनों के कदम नीम चुप्पी में गौशाला की ओर बढ़ रहे थे। जयचंदलाल के मन में बहुत कुछ उमड़ रहा था। वे रूपा की ओर देखते और दो घड़ी आँखें बंद कर लेते।

गौशाला में रूपा गायों को थपथपाता रहा। जयचंदलाल उन्हें नहलाते-धुलाते रहे फिर दूध निकाला। रूपा बाल्टियों में गिर रही झर्र-झर्र दूध की धार देख रहा था। झाग से भरी बाल्टियों को उठा कर एक तरफ रख रहा था। एक-एक कर सात बाल्टियां भर चुकी थीं। आठवीं बाल्टी भरने के बाद जयचंदलाल ने जल्दी-जल्दी गायों को थपथपाया और रूपा को साथ ले घर की ओर चल दिये। घर में सब लोग इन दोनों की प्रतीक्षा कर रहे थे। प्रत्यक्षतः घर में एक पुलक का सा वातावरण था। घर-परिवार के कुल पच्चीस लोग इकट्ठे हुए और सब गधैया जी के नोहरे की ओर चल दिये। इनमें से अधिकांश वहां जाते तो रोज ही थे, लेकिन आज जाने का मकसद कुछ और ही था।

दस बजे के आसपास सब गधैया जी के नोहरे पहुँचे। रोज की तरह आज भी लगभग एक हजार लोग ध्यान से आचार्यश्री के प्रवचन सुन रहे थे। मुनि सोहनलाल और मंत्री मुनि भी साधुओं के बीच उपस्थित थे। आचार्यश्री, मुनि सोहनलाल व मंत्री मुनि जानते थे कि आज जयचंदलाल का परिवार सहित आने का कारण क्या है। आचार्यश्री का पहले से चल रहा प्रसंग समाप्त हुआ तो श्रद्धालुजन में थोड़ी-सी हलचल हुई। कुछ ही देर में सब देखते हैं कि तेरह साल का एक बालक हाथ में सफेद रंग की झोली लिए आचार्यश्री की ओर बढ़ रहा है। दरअसल सबका ध्यान सफेद रंग की झोली ने आकर्षित किया। झोली का रहस्य किसी को मालूम नहीं था। रूपा आचार्यश्री के निकट पहुँचा, उन्हें प्रणाम किया और फिर झोली फैला दी। सभी उपस्थित श्रावकों की नजर रूपा की झोली पर थी। और जुबां पर चर्चा, जिसके कारण नोहरे में कुछ शोर बढ़ गया। कुछ ही पलों में इस शोर के बीच सधे स्वरों में ये शब्द उभरे- स्वर और शब्द झोली वाले बालक के थे-

'द्वारे तुम्हारे पै याचक है आया
दीक्षा की भिक्षा दिला दो प्रभु
लेने को हाथों में झोली ले आया
दीक्षा की भिक्षा दिला दो प्रभु

भव-भव का भूखा
छोटा सा कूका

पाया कभी भी न संयम का टूका
दिल में भरोसा तुम्हारा जमाया
जी भर के भोजन खिला दो प्रभु
दीक्षा की भिक्षा दिला दो प्रभु...

तुम सा न दानी घट-घट का ज्ञानी
तुम से न छानी है मेरी कहानी
कहने को माता-पिता को भी लाया
आज्ञा से इनकी जिमा दो प्रभु
दीक्षा की भिक्षा दिला दो प्रभु...

जितने भी प्यारे मतलब के सारे
स्वारथ बिना हो जाते किनारे
पंजे से इनके छुड़ा कर के जल्दी
संतों के अंदर मिला लो प्रभु
दीक्षा की भिक्षा दिला दो प्रभु

तुम ही हो नाती
तुम ही हो साथी
निद्रा तुम्हारे बिना नहीं आती
दुनिया की कल-कल ने मुझको जगाया
अमृत के प्याले पिला दो प्रभु...
दीक्षा की भिक्षा दिला दो प्रभु...

मोह में जड़ा हूं, जकड़ा पड़ा हूं
तो भी अभी तक मैं कच्चा घड़ा हूं
अब दे कृपा का सहारा सुहाया
रूपे के बंधन हिला दो प्रभु
दीक्षा की भिक्षा दिला दो प्रभु

रूपा के स्वर में याचक का ऐसा भाव था कि पत्थर भी अपने पास से कुछ न कुछ उसकी झोली में डालने को विवश हो जाएं। रूपा के भीतर की पीड़ा ने श्रावकों के मन को झकझोर दिया था। कितनी ही आँखों से झर-झर आँसू बह रहे थे। आचार्यश्री तुलसी ने स्थितप्रज्ञ हो रूपा की याचना सुनी। उनके मुखमंडल पर दाता के भाव उभरे किन्तु उन्होंने स्वयं को संयत किया, कुछ बोले नहीं। रूपा ने गीत में सब कुछ कह ही दिया था। फिर परिवार के लोगों ने आचार्यश्री से निवेदन किया कि वे बालक रूपचन्द्र को मुनि-दीक्षा की अनुमति दें। इसकी भावना को स्वीकार करें।

आचार्यश्री तुलसी ने अब तक मुनि दीक्षा या साध्वी-दीक्षा के लिए सार्वजनिक रूप से कितने ही याचकों का निवेदन सुना था। लेकिन शब्दों के साथ सुर और लय में पिरोयी हुई यह याचना अनूठी थी। वैसे भी जब भावपूर्ण शब्दों के साथ सुर-ताल और लय मिल जाते हैं तो एक अलौकिक सृष्टि की रचना होती है। ऐसी सृष्टि जिसमें परमब्रह्म की सत्ता के दर्शन होने लगते हैं। गधैया जी के नोहरे में रूपा के याचक-गीत ने ऐसी अलौकिक सृष्टि रच दी थी, जिसमें कण-कण अभिभूत हो चला था। आचार्यश्री ने पहले रूपा की ओर देखा फिर उसके परिजनों की ओर। फिर उपस्थित श्रावकों की ओर दृष्टि केन्द्रित करते हुए बोले-

-क्रमशः

मन्त्र ही मन्त्र

○ साध्वी मंजुश्री

<u>उपसर्गहर स्तोत्र का कल्प</u>

(1) ऊँ ह्वीं श्रीं अर्हम् नमिऊण पास विसहर वसह जिण फुलिंग ह्वीं श्रीं नमः।

उपसर्गहर स्तोत्र चौदह पूर्वधर भद्रबाहु स्वामी का बनाया हुआ है। यह महान् प्रभावशाली है एवं उपर्गहर स्तोत्र का मूल बीज मन्त्र है- यदि भीषण संकट आ जाय तो पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके, सबसे पहले 'श्री भद्रवाहु स्वामिप्रसादात् एष योगः फलतु'- ऐसा कहें, फिर ऊपर लिखें बीजमन्त्र की माला पद्मासन लगाकर पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके फेरें, और बाद में उपसर्गहर स्तोत्र 27 बार पढ़ें। इस प्रकार 27 दिन तक निरन्तर साधना करने से सब संकट दूर हो जाते हैं।

<u>पार्श्वनाथ प्रभु के मन्त्र</u>

(2) ऊँ पार्श्वनाथाय ह्वीं स्वाहा।

इस मन्त्र का जप 108 बार प्रतिदिन करने से सभी प्रकार के संकट टलते हैं। राज्य भय दूर होता है। तथा संग्राम में विजय प्राप्त होती है।

(3) ओम् ह्वीं श्रीं कलिकुण्डस्वामिने नमः।

इस मन्त्र का एक लाख जप करने से कठिन-से-कठिन कार्य सिद्ध होते हैं। दरिद्रता दूर होती है, लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। यह जप 21 दिन में पूर्ण करें। एक बार भोजन करें, ब्रह्मचर्य से रहें, और भूमि पर शयन करें।

(4) ओम् नमो भगवते श्रीपार्श्वनाथाय क्षेमंकराय ह्वीं नमः।

यह क्षेम करने वाला मन्त्र है। अचानक आने वाला संकट और भय सब दूर हो।

<u>नमिऊण स्तोत्र की साधना</u>

(1) नमो भगवतो अरहओ अजिय भगवई महाविज्जाय अजिअए उवसोमए अणिहए महाविज्जा सुभंकरे स्वाहा।

यह मन्त्र अन्न जल छोड़कर 1008 बार श्वेत माला से जपना चाहिए। इसके सिद्ध हो जाने पर सब कामनाएं पूर्ण हो जाती हैं।

(2) ओम् नमो अरिहंताणं ऊँ नमो भगवइए चंदाइ महाविज्जाए।

सूचना- ग्राम में प्रवेश करते समय इस विद्या का सात बार जप करने से कार्य में सफलता प्राप्त होती है। सम्मान बढ़ता है। परन्तु पहले भगवान पार्श्वनाथ के जन्म दिन (पौष बदी दशमी के दिन) उपवास रखकर एक हजार जाप करके विद्या सिद्ध कर लेनी चाहिए।

सुख-समृद्धि के प्रतीक हैं मांगलिक चिन्ह

अनादिकाल से पूरे विश्व में घर के बाहर मांगलिक चिन्ह बनाने की परंपरा रही है। आज से ढाई-तीन हजार वर्ष पहले भी लोग अपने घर के अंदर और विशेष तौर पर घर के बाहर कई प्रकार के प्रतीक चिन्ह बनाते थे। आज भी भारत समेत विश्व के लगभग सभी देशों में घर के बाहरी भाग व मुख्य द्वार पर मांगलिक चिन्हों को बनाया जाता है।

भारत में ऊँ, स्वास्तिक, मंगलकलश, पंचागुलक हाथ, हाथ के छापे, शुभ-लाभ, एवं श्री आदि का प्रयोग किया जाता है। इसमें ऊँ और स्वस्तिक सबसे ज्यादा बनाये जाते हैं। ये मांगलिक चिन्ह सुख-समृद्धि के सूचक माने जाते हैं। ऐसी मान्यता है कि इन्हें घर के मुख्य द्वार पर बनाने से सकारात्मक ऊर्जा घर में प्रवेश करती है, जिससे घर की सुख व समृद्धि में वृद्धि होती है। कई जगह लाल रंग न मिलने पर केसर या हल्दी का भी प्रयोग किया जाता है। भारतीय परंपरा में लाल रंग जीवन के विकास का शुभ रंग है। लाल रंग की महत्वता इसलिए भी और अधिक बढ़ जाती है, क्योंकि मंगल ग्रह का रंग भी लाल ही है। खुशी के मौके पर मंगलाचरण भी गाया जाता है। घर के आगे अशोक या आम के पत्तों का बंधन द्वार लगाना भी शुभ माना जाता है। भारत में लोग दरवाजे के आगे ऊँ तथा स्वस्तिक का चिन्ह बनाते हैं। 'स्वस्तिक' भगवान विष्णु का प्रतीक है तो 'श्री' मां लक्ष्मी का प्रतीक है। साथ ही घर के मुख्य द्वार के मध्य श्री गणेश को विराजित कर, उसके आसपास उनकी दोनों पत्नियों के नाम 'रिद्धि और सिद्धि' लिखने की भी परंपरा है, जिससे की घर में ज्ञान व धन की कमी नहीं रहती। इसी प्रकार मकान के मुख्य द्वार के सामने मंगल कलश की आकृति भी बनाई जाती है।

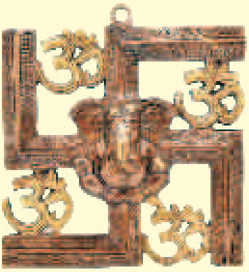

घर के मुख्य द्वार पर मांगलिक चिन्हों को लगाने से घर में नकारात्मक ऊर्जा प्रवेश नहीं करती है। इससे घर को बुरी नजर नहीं लगती और घर के आसपास नकारात्मक ऊर्जा भी नष्ट होती है, इसलिए मांगलिक चिन्हों की परंपराओं का निर्वाह प्राचीन काल से होता आ रहा है। मुख्य द्वार पर बने मांगलिक चिन्हों को देखकर, प्रत्येक व्यक्ति का मन प्रफुल्लित हो जाता है। प्रसन्नता और आस्था से लबरेज व्यक्ति उत्साहित होकर ज्यादा कार्य करता है और जीवन में सफलता प्राप्त करता है।

प्रस्तुति : मानसी जैन

लक्ष्मी का वरदान

बहुत समय पहले की बात है। प्रेमपुर नाम का एक छोटा सा गांव था। गांव के सारे स्त्री-पुरुष बड़े मेहनती, मिलनसार, धर्म-कर्म वाले ओर दयालु थे। उनकी कड़ी मेहनत के कारण ही उनके खेतों में हर साल हरी-भरी फसल लहराती थी। इतना अनाज पैदा होता था कि गांव का हर परिवार खुशी से जीवन व्यतीत कर रहा था। दूध-घी, अन्न, दालें, साग-सब्जी किसी भी चीज की कमी नहीं थी।

एक दिन दीपावली से दो दिन पूर्व लक्ष्मी जी उस गांव में आई। उन्होंने गांव के मुखिया से कहा- 'हे प्रेमपुर गांव के मुखिया, मैं इस गांव के लोगों की कड़ी मेहनत, सच्चाई, दयालुता, मिलनसारिता और भाईचारे से अत्यंत प्रभावित और प्रसन्न हूं, अतः मैं दीपावली के दिन मध्यरात्रि में यहां आकर गांव के हर परिवार की मनचाही इच्छा पूरी करूंगी।' कहकर लक्ष्मी जी अंतर्धान हो गई। मुखिया ने गांव में ढिंढोरा पिटवा दिया कि गांव के सारे लोग दीपावली के दिन घरों में दीप जलाकर, पूजा-अर्चना करके मध्यरात्रि से पहले पंचायत घर की चौपाल पर इकट्टे हो जायें। मध्यरात्रि में मां लक्ष्मी आकर सबको मनचाहा वरदान देंगी।

फिर क्या था। गांव वालों ने दीपावली के दिन पिछले वर्षों से भी अधिक दीपों की दीपमाला सजाई। सारा गांव दीपों के प्रकाश में नहा उठा। मध्यरात्रि में हीरे-मोती जड़ित ताज पहने और सोने के आभूषणों से लदी लक्ष्मी जी प्रकट हुई। सबने नतमस्तक होकर लक्ष्मी जी को शीश नवाया। लक्ष्मी ने आशीर्वाद के लिए अपना दाहिना हाथ ऊपर उठाया और बोली- 'मैं तुम लोगों से अति प्रसन्न हूं। जिसे जो मांगना है, एक-एक करके मेरे सामने आये और अपनी इच्छानुसार जो चाहे मांगे।'

फिर क्या था, सबसे पहले मुखिया आया, 'बोला मैया, यह मेरा गेहूं भरने का ड्रम है। इसे सोने-चांदी से भर दो।'

लक्ष्मी मां ने कहा- 'तथास्तु।'

देखते ही देखते ड्रम सोने-चांदी के आभूषणों से भर गया। इसी तरह सारे गांव वाले एक-एक करके सामने आये, सबने सोने-चांदी के सिक्के और आभूषण मांगे। लक्ष्मी मां ने सबको, सबकी इच्छा के अनुसार दे दिया और चली गईं।

सारा गांव रातों रात आस-पास के इलाकों में सबसे धनवान गांव बन गया। किसी आदमी के पास धन की कोई कमी नहीं थी। किसी ने सच ही कहा है कि जब हराम की कमाई आती है तो हराम के कामों में ही चली भी जाती है। जब गांव वालों के पास भरपूर धन-दौलत आ गई तो उनमें अहंकार आ गया। भाईचारा समाप्त हो गया। व्यर्थ के खर्चे और व्यसन बढ़ गये। ब्याह-बारातों में खुलकर खर्च होने लगा। लोग निकम्मे और आलसी हो गये। खेती-बाड़ी करना उनके बस के बाहर की बात हो गई। खेतों में जंगली घास और झाड़-झंखाड़ उग आये। सोना उगलने वाली धरती उदास हो गई। शहर के व्यापारी गांव में आकर गांव वालों की जरूरत की चीजें महंगे दामों पर बेचने लगे। अनाज, दालें, गुड़, घी, दूध सभी कुछ दूसरे स्थानों से आने लगा।

जब आमदनी कुछ न हो और जमा-पूंजी में से खर्चा ही खर्चा हो तो राजकोष भी खाली हो जाता है। लक्ष्मी के द्वारा धन पाकर लोग मेहनत करना ही भूल गये। पैसे की अहिमियत क्या होती है, यह कभी सोचा ही नहीं। संचित धन सब खर्च हो गया। लोग भुखमरी के कगार पर आकर खड़े हो गये।

जब धरती मां ने अपने पुत्रों की दीन-हीन दशा देखी तो उसका हृदय रो उठा। उसने गांव वालों का आह्वान किया और कहा- 'पुत्रो, तुम लक्ष्मी की चकाचौंध देखकर अपना मार्ग भटक गये थे। अपनी असली मां-पृथ्वी मां को ही भूल गये? अपनी भुजाओं के बल से तुम लोग खुशी का जीवन व्यतीत कर रहे थे लेकिन सोने-चांदी के लालच ने तुम्हारी अक्ल पर परदा डाल दिया और तुम भूल गये कि जो आनंद अपने खून-पसीने की कमाई से मिलता है, वह अन्यंत्र कहीं नहीं। अरे बुद्धिहीनों, यदि लक्ष्मी से मांगना ही था तो उससे गांव की खुशहाली, आपसी प्यार और भाईचारा मांगते कि हमारी मेहनत से हमारे खेतों में सोना बरसे। यदि ऐसा होता तो तुम्हें आज यह दुर्दिन न देखने पड़ते। जागो, उठो, अपने हल बैल तैयार करो, कुदाल और फावड़ा उठाओ और वर्षों से बंजर पड़े खेतों में पसीना बहाकर उन्हें उपजाऊ बनाओ। याद रखो, मैं धरती मां ही तुम्हारी सच्ची पालनहार हूं। मेरी सेवा करो, तभी तुम्हारे भंडार भरेंगे।' गांव वालों की आंखें खुली। धरती मां की नसीहत और पुकार पर सारे गांव वाले अपने-अपने खेतों की ओर चल पड़े।

देखते-देखते गांव में पहले जैसा वातावरण बन गया। सच है, अपनी कमाई में ही आनंद और संतुष्टि है।

प्रस्तुति : साध्वी वसुमती

सच्ची कृपा

एक बार एक निर्धन ब्राह्मण के मन में धन पाने की तीव्र कामना हुई। वह सकाम यज्ञों की विधि जानता था, किंतु धन ही नहीं तो यज्ञ कैसे हो? वह धन की प्राप्ति के लिये देवताओं की पूजा और व्रत करने लगा। कुछ समय एक देवता की पूजा करता परंतु उससे कुछ लाभ नहीं दिखायी पड़ता तो दूसरे देवता की पूजा करने लगता और पहले को छोड़ देता। इस प्रकार उसे बहुत दिन बीत गये। अन्त में उसने सोचा– 'जिस देवता की आराधना मनुष्य ने कभी न की हो, मैं अब उसी की उपासना करूंगां वह देवता अवश्य मुझ पर शीघ्र प्रसन्न होगा।'

ब्राह्मण यह सोच ही रहा था कि उसे आकाश में कुण्डधार नामक मेघ के देवता का प्रत्यक्ष दर्शन हुआ। ब्राह्मण ने समझ लिया कि 'मनुष्य ने कभी इनकी पूजा न की होगी। ये बृहदाकार मेघ देवता देवलोक के समीप रहते हैं, अवश्य ये मुझे धन देंगे।' बस, बड़ी श्रद्धा-भक्ति से ब्राह्मण ने उस कुण्डधार मेघ की पूजा प्रारम्भ कर दी।

ब्राह्मण की पूजा से प्रसन्न होकर कुण्डधार ने देवताओं की स्तुति की क्योंकि वह स्वयं तो जल के अतिरिक्त किसी को कुछ दे नहीं सकता था। देवताओं की प्रेरणा से यक्षश्रेष्ठ मणिभद्र उसके पास आकर बोले– 'कुण्डधार! तुम क्या चाहते हो?'

कुण्डधार– 'यक्षराज! देवता यदि मुझ पर प्रसन्न हैं तो मेरे उपासक इस ब्राह्मण को वे सुखी करें।'

मणिभद्र– 'तुम्हारा भक्त यह ब्राह्मण यदि धन चाहता हो तो इसकी इच्छा पूर्ण कर दो। यह जितना धन मांगेगा, वह मैं इसे दे दूंगा।'

कुण्डधार– 'यक्षराज! मैं इस ब्राह्मण के लिये धनकी प्रार्थना नहीं करता। मैं चाहता हूं कि देवताओं की कृपा से यह धर्मपरायण हो जाय। इसकी बुद्धि धर्म में लगे।'

मणिभद्र– 'अच्छी बात! अब ब्राह्मण की बुद्धि धर्म में ही स्थित रहेगी।' उसी समय ब्राह्मण ने स्वप्न में देखा कि उसके चारों ओर कफन पड़ा हुआ है। यह देखकर उसके हृदय में वैराग्य उत्पन्न हुआ। वह सोचने लगा– 'मैंने इतने देवताओं की और अन्त में कुण्डधार मेघ की भी धन के लिये आराधना की, किंतु इनमें कोई उदार नहीं दिखता। इस प्रकार धन की आश में ही लगे हुए जीवन व्यतीत करने से क्या लाभ! अब मुझे परलोक की चिन्ता करनी चाहिये।'

ब्राह्मण वहां से वन में चला गया। उसने अब तपस्या करना प्रारम्भ किया। दीर्घकाल तक कठोर तपस्या करने के कारण उसे अद्भुत सिद्धि प्राप्त हुई। वह स्वयं आश्चर्य करने लगा– 'कहां तो मैं धन के लिए देवताओं की पूजा करता था और उसका कोई परिणाम नहीं होता था और कहां अब मैं स्वयं ऐसा हो गया कि किसी को धनी

होने का आशीर्वाद दे दूं तो वह निःसंदेह धनी हो जाएगा!'

ब्राह्मण का उत्साह बढ़ गया। तपस्या में ही उसकी श्रद्धा बढ़ गयी। वह तत्परता पूर्वक तपस्या में ही लगा रहा। एक दिन उसके पास वही कुण्डधार मेघ आया। उसने कहा– 'ब्रह्मन्! तपस्या के प्रभाव से आपको दिव्यदृष्टि प्राप्त हो गयी है। अब आप धनी पुरुषों तथा राजाओं की गति देख सकते हैं।' ब्राह्मण ने देखा कि धन के कारण गर्व में आकर लोग नाना प्रकार के पाप करते हैं और घोर नरकों में गिरते हैं।

कुण्डधार बोला– 'भक्तिपूर्वक मेरी पूजा करके आप यदि धन पाते और अन्त में नरक की यातना भोगते तो मुझसे आपको क्या लाभ होता?जीव का लाभ तो कामनाओं का त्याग करके धर्माचरण करने में ही है। उन पर सच्ची कृपा तो उन्हें धर्म में लगाना ही है। उन्हें धर्म में लगाने वाला ही उनका सच्चा हितैषी है।'

ब्राह्मण ने मेघ के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और कामनाओं का त्याग करके अन्त में मुक्त हो गया।

(महाभारत, शान्तिपर्व)

पुराण-कथा

दशहरा-कथा

देवी दुर्गा ने विजय दशमी (दशहरा) के दिन महिषासुर जिसे भैंस असुर के नाम से भी जाना जाता है, का वध किया था।

पौराणिक कथाओं के अनुसार महिषासुर के एकाग्र ध्यान से बाध्य होकर देवताओं ने उसे अजेय होने का वरदान दे दिया। महिषासुर को वरदान देने के बाद देवताओं में भय व्याप्त हो गया कि वह अब अपनी शक्ति का दुरूपयोग करेगा। प्रत्याशित प्रतिफल स्वरूप सर्व शक्तिमान भैंस असुर महिषासुर ने नरक का द्वार स्वर्ग के द्वार तक खींच दिया और उसके इस विशाल साम्राज्य को देख देवता विस्मय की स्थिति में आ गए।

महिषासुर के इस दुस्साहस से क्रोधित होकर देवताओं ने देवी दुर्गा की रचना की। मान्यता है कि देवी दुर्गा के निर्माण में सारे देवताओं का एक समान बल लगाया गया था। महिषासुर का नाश करने के लिए सभी देवताओं ने अपने-अपने अस्त्र देवी दुर्गा को दिए थे और देवताओं के सम्मिलित प्रयास से देवी दुर्गा और बलवान हो गईं और महिषासुर का वध करने में सक्षम रही।

सावधान : डेंगू और चिकनगुनिया ने दे दी है दस्तक

मच्छरों से फैलने वाली चिकनगुनिया और डेंगू जैसी बीमारियां आमतौर पर बरसाती मौसम में होती हैं लेकिन इस वर्ष इन्होंने जल्दी दस्तक दे दी है। विशेषज्ञ इसे लेकर चिंतित तो हैं पर इसे असामान्य नहीं मानते। ये बीमारियां मादा एडीस मच्छरों द्वारा फैलाई जाती हैं, जो साफ पानी में पलते हैं। बरसात के पानी के साथ, लगातार होने वाले निर्माण कार्य, छतों पर खुली पानी की टंकियां और कूड़े के ढेर भी इनकी पैदाइश के लिए अनुकूल माहौल पैदा करते हैं। एडीस मच्छर का जीवनकाल लगभग एक सप्ताह का होता है। इसमें ये तीन बार प्रजनन करते हैं और एक बार में करीब 100 अंडे देते हैं। ये अंडे खुश्क मौसम में नौ महीने तक सुस्त अवस्था में रह सकते हैं और अनुकूल माहौल मिलने पर फिर सक्रिय हो सकते हैं। चिकनगुनिया और डेंगू के वायरस वाले मच्छर जिन लोगों को काटते हैं, वो उनके वाहक बन जाते हैं, और जब मच्छर उस व्यक्ति को काटता है तो वह भी संक्रमित हो जाता है। इस तरह यह बीमारी आगे बढ़ती जाती है। चूंकि एडीज मच्छरों के अंडे लंबे समय तक सुस्त अवस्था में रहते हैं, जिसे देखते हुए ये जरूरी है कि इनसे बचाव के लिए उपाय पूरे साल किए जाने चाहिए। मसलन- शरीर को ढक कर रखें। मच्छर मारने वाली दवाई, स्प्रे या क्रीम का प्रयोग करें।

छत पर रखी टंकियों, निर्माणाधीन भवनों के टैंकों को समय-समय पर साफ करें। पानी की सभी टंकियों और बर्तनों को ढक कर रखें ताकि उनमें मच्छर न पैदा हो सकें तथा कूलर का पानी नियमित रूप से बदलें।

आसपास के इलाके को साफ रखें और जल-मल निकासी की व्यवस्था को दुरूस्त रखें प्रशासनिक स्तर पर मच्छर प्रजनन पर पूरे साल निगाह रखी जाने चाहिए, ताकि पता रहे कि ये बीमारियां फैलाने वाले मच्छर कहां-कहां पल रहे हैं।

लक्षण और इलाज

डेंगू और चिकनगुनिया एक वाइरल बीमारी

है, जिनमें प्रमुख लक्षण ठंड लगकर बुखार आना, जोड़ों में दर्द, भूख कम लगना, कमजोरी महसूस होना, जी मचलना, त्वचा पर लाल चकत्ते पड़ना आदि हैं।

चूंकि डेंगू और चिकनगुनिया में फ्लू जैसा बुखार होता है। कुछ मामलों में ब्लड प्लेटलेट्स की संख्या तेजी से कम होती है, इसलिए बुखार होने पर खून की जांच आवश्यक है, ताकि समय रहते ब्लड प्लेटलेट्स की भरपाई की जा सके। हालांकि इसके इलाज के लिए कोई एंटीवायरल दवा उपलब्ध नहीं है लेकिन कुछ दवाएं दर्द और बुखार कम करने में सहायक अवश्य होती हैं। इन वायरल से ग्रसित होने पर ज्यादा से ज्यादा द्रव पदार्थ और पानी लें, ज्यादा से ज्यादा आराम करें और नॉन-एस्प्रिन दर्द निवारक दवा लें। पीड़ित व्यक्ति को पौष्टिक भोजन दें, जिसमें सभी आवश्यक तत्व मौजूद हों। समय-समय पर डॉक्टर से परामर्श लेते रहें तथा कुछ घरेलू उपाय जैसे बकरी का दूध व पपीते के पत्ते का रस पिएं। घबराएं बिल्कुल नहीं, क्योंकि अगर आप पर्याप्त एहतिहात बरतते हैं तो जल्द ही इस बीमारी को दूर भगा सकते हैं।

-योगी अरुण तिवारी

चुटकुले

1. मालिक (माली से)- बगीचे में पानी दे दो।
माली- हुजूर, आज तो बारिश हो रही है।
मालिक- तो छाता लगाकर दे दो।

2. अध्यापक- चिंटू तुम कल स्कूल क्यों नहीं आए?
चिंटू- सर, कल मैं सपने में अमरीका चला गया था।
अध्यापक- ठीक है! पिन्टू तुम क्यों नहीं आए?
पिन्टू- सर, मैं चिंटू को एयरपोर्ट छोडने गया था।

3. रेल के डिब्बे में चिंटू की मां ने चिंटू से कहा- चुपचाप बैठे रहो। शरारत की, तो मारूंगी।
चिंटू- तुमने मुझे मारा, तो मैं टिकट चेकर को अपनी उम्र बता दूंगा।

4. एक तोता एक कार से टकरा गया, तो उस कार वाले ने उसे उठा कर पिन्जरा में डाल दिया दूसरे दिन जब तोते को होश आया, वह बोला, आईला! जेल, कार वाला मर गया क्या?

प्रस्तुति : सुपारस

मासिक राशि भविष्यफल-अक्टूबर 2017

○ डॉ. एन. पी. मित्तल, पलवल

मेष- मेष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पर्याप्त लाभ देने वाला है। इस माह किन्हीं जातकों के कार्य क्षेत्र में परिवर्तन की भी आशा है। इन जातकों के मित्र इनकी मदद को आगे आयेंगे, किन्तु परिवार में मन मुटाव संभव है, जिससे मानसिक उद्विग्नता रहेगी। अपनी मां की सेहत का ध्यान रखें।

वृष- वृष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह सामान्य लाभ देने वाला है, पर व्ययाधिक्य भी होगा। किसी नये कार्य की योजना भी बन सकती है। कार्य रुक-रुक कर बनेंगे। शत्रु आपको परेशानी में डाल सकते हैं। बुजुर्गों की राय से कार्य करें, सफलता मिलेगी।

मिथुन- मिथुन राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से पूर्वार्ध की अपेक्षा उत्तरार्ध अधिक लाभप्रद है। व्ययाधिक्य चिंता का कारण बन सकता है। लड़ाई झगड़े से दूर रहें। शत्रु सिर उठाएंगे, किंतु उन्हें हार का सामना करना पड़ेगा। कुछ छोटी-बड़ी यात्राओं के भी योग बनेंगे जिनमें सावधानी अपेक्षित है। समाज में यश-मान-प्रतिष्ठा बनी रहेगी। दाम्पत्य जीवन सामान्य रहेगा।

कर्क- कर्क राशि के जातकों के लिये यह माह लाभालाभ की स्थिति लिये होगा। कार्य क्षेत्र में कोई परिवर्तन भी करना पड़ सकता है। कुछ यात्राएं लाभप्रद हो सकती हैं, किंतु राह में सावधानी अपेक्षित है। पत्नी तथा बच्चों की सेहत की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। इस माह योजनाएं अधिक बनेंगी, किंतु उनका क्रियान्वयन कम होगा।

सिंह- सिंह राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह लाभप्रद सिद्ध होगा। माह का आरंभ और अत्यधिक शुभ है तथा मध्य शुभ फल दायक है। कार्य क्षेत्र की उन्नति के लिये नई योजनाएं बनेंगी। सैर सपाटे के मौके आयेंगे। समाज में मान-सम्मान बना रहेगा। छोटी बड़ी यात्राएं होंगी, जिनसे लाभ की आशा है।

कन्या- कन्या राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह आय से व्यय अधिक कराने वाला है। किन्हीं जातकों को व्ययाधिक्य के कारण ऋण लेने की परिस्थिति भी आ सकती है। शत्रु सिर उठायेंगे, पर आप उन्हें दबा लेंगे। अपनी तथा अपने जीवन साथी के स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

तुला- तुला राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह श्रेष्ठ फल दायक है। व्यापार में लाभ तो होगा ही। जिनका धन रूका हुआ है, उनके पैसे मिलने के आसार हैं। कई विद्यार्थियों को, उनके कैरियर का सही चुनाव करने में सफलता मिलेगी, जिससे मन में प्रसन्नता होगी, यात्राएं लाभप्रद रहेंगी। स्वास्थ्य की दृष्टि से सावधान रहें।

वृश्चिक- वृश्चिक राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह लाभालाभ की स्थिति लिये रहेगा। राजनीति में रूचि रखने वालों के लिये यह माह अच्छा साबित होगा। कुछ जातकों की समाज में यश-मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि संभावित है। यात्राओं में लाभ की आशा भी की जा सकती है, किंतु दुर्धटना संभावित है। घर परिवार में सुख-शांति बनाए रखने में ये जातक सफल होंगे।

धनु- धनु राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह श्रम साध्य एवं संघर्ष पूर्ण परिस्थितियों से गुजरते हुए अर्थ प्राप्ति का रहेगा। हां कोई नई योजना बनाई जा सकती है या उसका क्रियान्वयन हो सकता है। कोई धार्मिक कार्य इन जातकों द्वारा किया जा सकता है। इन जातकों के हित मे रहेगा अगर वे अपने से ज्यादा असरदार आदमी से पंगा न लें। परिवार में सामन्जस्य बिठाने की कोशिश करें।

मकर- मकर राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह शुभ फल दायक कहा जाएगा। आपके पुराने लटके हुए काम फिर से शुरू होने का समय है। इस माह नई योजनाओं का श्री गणेश भी हो सकता है। किन्हीं जातकों को वाहन आदि से चोट भी लग सकती है। सरकारी कार्य करने वाले जातक भी अपने उच्चाधिकारियों से लाभान्वित होंगे। समाज में यश, मान, प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

कुम्भ- कुम्भ राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से कुल मिला कर शुभ फलदायक ही कहा जायेगा। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी। नई योजनाओं का क्रियान्वयन भी संभव है। छोटी-बड़ी यात्राएं भी हो सकती हैं तथा वाहन सुख का लाभ भी मिल सकता है। संतान के विषय में भी कोई शुभ सूचना मिल सकती है।

मीन- मीन राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से मिलाजुला फल देने वाला है फिर भी आय से व्यय ही अधिक रहेगा। सरकार में कार्य करने वालों के लिये इस माह का मध्य अच्छा है। छोटी-बड़ी यात्राएं होंगी जिनसे लाभ रहेगा। इन जातकों का इस माह स्वास्थ्य नरम रहेगा। किन्ही जातकों को रूका हुआ अपना पैसा मिल सकता है। स्वास्थ्य की दृष्टि से सावधान रहें।

-इति शुभम्

आत्मानुभव में उतरें श्वास-अभ्यास से

○ आचार्यश्री रूपचन्द्र

अपने 79वें वर्ष-प्रवेश पर जैन आश्रम, नई दिल्ली में मानव मंदिर मिशन द्वारा आयोजित जन-सभा को संबोधित करते हुए पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द्रजी ने कहा- आज इस शरीर को इस धरती पर जन्म लिये 78 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। इसी प्रसंग पर आप सब मुझे अपनी मंगल भावनायें/शुभ कामनायें देने यहां पर उपस्थित हैं। मैं आप सबकी तथा देश-विदेश से फोन-संदेशों द्वारा दी गई सद्भावनाओं/शुभ कामनाओं का सम्मान करता हूं। किंतु इसके साथ यह भी स्मरण कराना चाहता हूं यह उम्र इस वर्तमान शरीर की है, आत्मा की नहीं। और इस ओर भी आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं हम आत्मा हैं शरीर नहीं। इसलिए शरीर की उम्र को आत्मा की उम्र न मान लें।

आपने कहा-हमारे जन्म की पहली सांस के साथ यह जीवन-यात्रा शुरू होती है और अंतिम सांस के साथ मृत्यु हमारा वरण कर लेती है। वह अंतिम सांस किसी समय हो सकती है। इसलिए हर सांस के साथ नया जन्म जुड़ा है, यह कहना गलत नहीं होगा। और हर सांस के साथ मौत जुड़ी है यह कहना भी गलत नहीं होगा। सोचना इतना ही है जन्म और मृत्यु के बीच जी रहे जीवन के हमारे कदम क्या परमात्मा की ओर बढ रहे हैं?-

अगर समझें तो हर सांस के साथ नया जनम होता है,
सच यह भी है हर पल मौत का फासला कम होता है,
अगर जाग जाएं सांसों की यह सचाई जानकर,
तभी परमात्मा की राह पर हमारा हर कदम होता है।

आपने कहा- सांस के आने-जाने का संबन्ध केवल शरीर और प्राणों से नहीं है। हम जरा गहराई में उतरें तो पाएंगे कि आत्मा और शरीर के बीच श्वास ही सेतु-बंध का काम करता है। इधर शरीर है उधर आत्मा। श्वास दोनों को जोडने वाला पुल है। जिस दिन यह पुल टूट जाता है शरीर और आत्मा का रिश्ता छूट जाता है। इसी का नाम ही तो मृत्यु है। किंतु इस जीवन में अगर हम थोड़ा-सा अभ्यास करें तो इसी श्वास के माध्यम से आत्मानुभव में उतर सकते हैं। श्वास सध जाये तो मन सध जाएगा। क्योंकि श्वास और मन दोनों भीतर में जुड़े हुए हैं। श्वास चंचल होगा मन भी चंचल होगा। मन चंचल होगा श्वास भी चंचल होगा। काम क्रोध आदि मन के आवेग के समय क्या हमारे श्वासों में वेग नहीं बढ जाता है? यदि उस समय हम अपने श्वास-वेगों को शान्त रखने का

अभ्यास सीख लें, मन के आवेग स्वयं शांत हो जाएंगे। श्वास और मन तो लहरें हैं, चेतना का समन्दर गहराइयों में हैं। उसके अनुभव के लिए इन लहरों के पार जाना होगा। इसके बिना उम्र भर तैर-कर भी उस असीम आनंद-अनुभव/आत्मानुभव से वंचित रह जाएंगें-

लहरों पे रहा गहरे में उतरकर नहीं देखा
किश्ती के मुसाफिर ने समंदर नहीं देखा
जब से चले हैं नजर है केवल मंजिल पर
हमने रुक-रुक कर माइल का पत्थर नहीं देखा।

आपसे यही कहना है इन अनमोल सांसों को आत्मानुभव में उतरने का सेतु बनायें। आत्मा और शरीर के बीच बहनेवाली नदी को तैरकर या नाव से कब तक पार करते रहेंगे? श्वास-अभ्यास का ऐसा पुल बन जाये कि जब चाहें आत्म-जगत का अनुभव ले सकें-

पार कब तक कर सकेंगे तैर कर या नाव से
एक पुल अब तो बना लें इस नदी के वास्ते
देवता बनिये भले ही मत किसी के वास्ते
आदमी बन जाइये बस आदमी के वास्ते।

अपनी विदेश-यात्रा की चर्चा करते हुए आपने कहा- चाहे जैना-कन्वेंशन हो या पर्युषण-आराधना वहां हजारों-हजारों की संख्या में समाज इसलिए धर्म-आराधना तथा संत-उपासना का आत्म-लाभ ले पाता है क्योंकि वहां पंथ से ऊपर संत तथा संप्रदायों से ऊपर धर्म का स्वाद उन्होंने चख लिया है-

यहां पंथ-धर्म की आराधना होती है
वहां संत-धर्म की आराधना होती है
तेरे-मेरे के भेदों से ऊपर उठने पर ही
सचमुच अरिहंत-धर्म की आराधना होती है।

भारत में पिछले दिनों धर्म-जगत में होने वाली दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं के संदर्भ में आपने कहा- कुछ ऐसे ही अवांछनीय घटना-प्रसंग पर मैंने वर्षों पूर्व कहा था-

घुटता है अब श्वास कि खिड़की खोल दो तुम
रोता है विश्वास कि खिड़की खोल दो तुम
नहीं चाहिए हमें किसी भी प्रभु के दर्शन
बन्द करो बकवास कि खिडकी खोल दो तुम

पूज्यवर के लगभग एक घंटे में भावपूर्ण प्रवचन में पूरा जन-समुदाय जैसे भाव-समाधि में डुबकियां ले रहा था।

इस प्रसंग पर डॉ. विनीता गुप्ता ने पूज्य गुरूदेव के जीवन पर आधारित उपन्यास 'हंस अकेला' के जन्म-प्रसंग के अंश सुनाए। श्रीमती प्रियंवदा तिवारी ने पूज्यवर के चरणों में श्रद्धा-सुमन प्रकट करते हुए अपनी विनोद पूर्ण शैली में पूरी सभा को हर्ष-विभोर कर दिया। साध्वी-समुदाय का अभ्यर्थना-गीत, गुरूकुल की बालिकाओं द्वारा मधुर बधाई गीत तथा गुरूवर के जीवन पर शब्द-चित्र का जन-समुदाय ने करतल-ध्वनि से स्वागत किया।

लगभग अढाई घंटे चले इस आयोजन में पूज्या प्रवर्तिनी महासती मंजुलाश्रीजी का अस्वस्थ अवस्था में भी बिराजमान होना पूरे समाज के लिए वरदान-स्वरूप था।

आप द्वारा फरमाए गए दो वाक्यों- जब तक बुढापा नहीं आ जाता, बीमारियां शरीर को नहीं घेर लेती, इन्द्रियां दुर्बल नहीं होती, उससे पहले-पहले धर्माचरण कर लो- का उपस्थित जन-समुदाय ने श्रद्धा-नत हो सम्मान दिया। इस अवसर पर राजस्थान, लाडनूं से श्री कमल सिंह बैद, सरदारशहर से श्री माणक चन्द शांतिबाई सिंघी, हिसार, हरियाणा की मेयर श्रीमती शकुंतला सीमा राजलीवाल, मानव मंदिर सुनाम के पदाधिकारी श्री पुरूषोत्तम बावा, श्री जगदीश सिंगला, श्री चन्द्रप्रकाश सिंगला तथा श्री अशोक गर्ग ने शालार्पण के साथ सुनाम-पदार्पण की प्रार्थना की।

साध्वीश्री समताश्री जी ने कार्यक्रम की संयोजना के साथ गुरूकुल के बच्चों की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। उपस्थित जन-समुदाय ने खड़े होकर अपना हर्ष प्रकट किया। समाज-सेवी श्री बसंतराज अरूणा मेहता ने अपने पिताश्री की पुण्य स्मृति में प्रति वर्ष गुरूकुल के एक छात्र को पचीस हजार रूपये की छात्र-वृत्ति प्रदान करने की घोषणा की। इसी प्रसंग पर श्री सुरेन्द्र दूगड ने अपनी दिंवगत मातुश्री लिछमी देवी दूगड, श्री वी.सी. अग्रवाल, श्रीमती ईशा अग्रवाल ने अपनी दिवंगत मातुश्री ऊमा अग्रवाल तथा श्री मनीष जैन ने अपने दिवंगत पिताश्री श्री पवनचन्द्र जैन की पुण्य स्मृति में अपने विचारोद्गार प्रकट किये। पूज्य गुरूदेव ने पूरे जन-समुदाय के साथ मौन मंत्रोच्चार से दिवंगत आत्माओं की ऊर्ध्व गति तथा बंधन-मुक्ति की मंगल कामना की। योगी अरूण तिवारी ने मानव मंदिर मिशन की देश-विदेश में यौगिक प्रभावों का उल्लेख करते हुए इस अवसर पर प्राप्त अनुदान राशि की घोषणा की। मधुर प्रसाद के साथ समारोह संपन्न हुआ। पूज्य गुरूदेव तथा पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री का आशीर्वाद, मातृ-तुल्या साध्वी चांदकुमारीजी, साध्वी कनकलताजी, साध्वी समताश्रीजी, साध्वी वसुमतीजी, गुरुकुल एवं सेवा-धाम हॉस्पिटल के स्टाफ-सदस्यों की लगन सेवाओं से मिशन के सभी प्रकल्प प्रभावी ढंग से अग्रसर हैं।

<u>पूज्य गुरूदेव के भजनों का यू-ट्यूब पर वीडियो प्रसारण</u>

पूज्यवर के भजन, यशस्वी संगीतकार श्री राजेन्द्र जैन के मधुर स्वर तथा श्री रतनलाल बसंतकुमार सिंघी की संयोजना, योगी अरुण तिवारी के मार्ग-दर्शन तथा गुरुकुल का छात्र मनीष जैन की कलात्मक सज्जा के साथ 'माटी री आ काया' भजन का यू-ट्यूब पर वीडियो प्रसारण ने इस आयोजन की शोभा में चार चांद लगा दिये। अब पूज्य गुरूदेव के भजन, प्रवचन व अन्य विडियो यू-ट्यूब पर देख सकते हैं। चैनल का नाम है 'Acharya Roopchandra Bhajan' यह गूगल और यू-ट्यूब पर सर्च करने पर खुलेगा।

"आइने इधर भी हैं" समकालीन हिंदी कविता का आज

मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट, नई दिल्ली की ओर से सराय काले खां, रिंग रोड स्थित आश्रम में समकालीन कविता का आज विषय पर एक सेमिनार आयोजित हुआ। आचार्य कवि मुनि रूपचन्द्र जी के सान्निध्य में इस आयोजन की अध्यक्षता प्रो. डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने की, जो केंद्रीय साहित्य अकाडेमी रवीन्द्र भवन के अध्यक्ष हैं। प्रो. फूलचंद मानव के चौथे हिंदी कविता-संग्रह पर नवगीतकार आलोचक श्री वेदप्रकाश शर्मा वेद, शायरा नीना शहर, डॉ. सुरेश त्रिपाठी ने आपके लेखन को आज की काव्य-धारा के समानान्तर घोषित किया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने संत परम्परा, आधुनिक जैन काव्य में आचार्य रूपचन्द्र की गजलों, कविताओं पुस्तकों की गहराई में जाकर तारीफ करते हुए 'आईने इधर भी हैं' के माध्यम से फूलचंद मानव की कविता के यथार्थ और व्यंग्य को भी उभारा। आचार्य मुनि रूपचन्द्र ने समाज में आइना और काव्य के दर्पण में प्रतीकात्मकता के आधार पर आज की कविता में फूलचन्द्र मानव के लेखन पर बधाई देते हुए कवि के पारदर्शी चरित्र को रेखांकित किया। डॉ. गौरी शंकर रैना ने 'आइने इधर भी हैं' से काव्य पंक्तियां 'कोट' करते हुए मंच संचालन वखूबी निभाया, इस अवसर पर श्री नटराज प्रकाशन से फूलचन्द्र मानव की कृति हिंदी गजल का यथार्थ और साये में धूप का लोकार्पण भी आचार्य रूपचन्द्र व प्रो. विश्वनाथ तिवारी द्वारा सम्पन्न हुआ। योगी अरुण तिवारी, निर्मला पुगलिया, मनीष जैन की सक्रियता सराहनीय रही।

-लंदन, कनाडा के हिंदु जैन मंदिर में पूज्यगुरूदेव के प्रवचन के पश्चात आभार प्रकट करते हुए संस्था के प्रमुख श्री पुरूषोत्तम गुप्ता व दायें प्रवचन सुनते लंदन समाज के लोग।

–मानव मंदिर द्वारा आयोजित समारोह में अपना उद्‌बोधन देते हुए पूज्य आचार्यश्री व मंच पर विराजमान हैं (दायें से) साध्वी चांद कुमारी जी, साध्वी कनकलता जी, साध्वी समताश्रीजी, साध्वी वसुमती जी, महासती साध्वी मंजुलाश्रीजी महाराज व गुरूकुल के नन्हें बालक।

–पूज्य गुरूदेव के मंगल–मंत्रों से आशीर्वाद प्राप्त करते भक्तजनों का एक दृष्य।

–मानव मंदिर गुरूकुल द्वारा आयोजित पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द्रजी महाराज को गुरूकुल की तरफ से भेंट समर्पित करते हुए योगी अरूण, साध्वी–गण, गुरूकुल के छात्र–छात्राऐं व स्टाफ।

–पूज्यवर के जन्मोत्सव पर साध्वी कनकलता जी के नेतृत्व में दो–अलग–अलग गीतों को प्रस्तुति देती हुए मानव मंदिर गुरूकुल की छात्रायें।

–पूज्यवर के सानिध्य में साध्वी समताश्री वेस्ट ऑफ स्टूडेंट धीरज जैन का परिचय करवाते हुए। 10वीं की परीक्षा परिणाम में सर्वोत्तम अंक प्राप्त करने वाले छात्र अशोक जैन को स्कोलरशिप प्रदान करते हुए श्री बसंत अरूणा मेहता व लायंस क्लब शक्ति के पदाधिकारी।

–मानव मंदिर मिशन की शिक्षा की एक शाखा पिथौरागढ, उत्तराखंड के पदाधिकारी श्री आनंद बिष्ट व श्री एन.बी. सिंह पूज्य गुरूदेव को पुष्प गुच्छ भैंट करते हुए व साध्वी समताश्री उनका परिचय करवाते हुए।

–श्रीमती प्रियंवदा तिवारी पूज्य गुरूदेव के प्रति अपनी भावना प्रकट करते हुए।
–पूज्य गुरूदेव से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए श्री महेश तिवारी व श्री सुभाष तिवारी।

–79वें वर्ष-प्रवेश समारोह में पूज्य गुरूदेव के प्रति मंगल-भावना प्रकट करते हुए (बायें से) श्रीमती विनीता गुप्ता, श्रीमती निर्मला पुगलिया, श्री कमल वैद, श्री चिराग सिंघी, श्रीमती शांति देवी सिंघी व श्री मानक चन्द्र सिंघी।

–पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र महाराज के जन्मोत्सव पर आशीर्वाद प्राप्त करते हुए मानव मंदिर, सुनाम के पदाधिकारी अशोक गर्ग, पुरूषोत्तम बाबा, जगदीश सिंगला, चन्द्रप्रकाश सिंगला आदि।

-प्रो. फूलचन्द मानव की पुस्तक 'आइने इधर भी हैं' पर परिचर्चा के पश्चात सामूहिक छाया चित्र में पूज्य गुरूदेव से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए। (दायें से) डॉ. सुरेश त्रिपाठी, प्रो. फूलचन्द मानव, श्री विश्वनाथ तिवारी, योगी अरूण, श्री गौरी शंकर रैना, श्री वेदप्रकाश शर्मा, शायरा नीना शहर।

-पूज्य गुरूदेव की सफल विदेश यात्रा के बाद भारत आगमन पर इंदिरा गांधी एयरपोर्ट पर स्वागत करते हुए मानव मंदिर गुरूकुल के बच्चे, गुरूकुल व सेवाधाम का स्टाफ व अन्य भक्तजन। साथ में हैं शिष्य योगी अरूण।

-बी.जे.पी. के वरिष्ठ नेता श्री कलराज मिश्र, योगी अरूण से रूपरेखा मासिक पत्रिका प्राप्त करते हुए।
-पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री की विंडसर व लंदन कनाडा प्रवास को सफल बनाने वाले प्रमुख श्री अमृत किरण नहाटा व चंदुभाई रंजना बहन मोरबिया पूज्य गुरूदेव से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए। साथ में हैं योगी अरूण।

P. R. No.: DL(S)-17/3082/2015-17
Rgn. No.: DELHIN/2000/2473
Date of Post : 27-28

SEVA-DHAM Plus

Since 1994

............The Wellness Center

(YOGA, AYURVEDA, NATUROPATHY & PHYSIOTHERAPY)

KH-57, Ring Road, (Behind Indian Oil Petrol Pump), Sarai Kale Khan, New Delhi - 110013
Ph. : +91-11-2632 0000, +91-11-2632 7911 Fax : +91-11-26821348 Mob. : +91-9868 99 0088, +91-9999 60 9878
Website : www.sevadham.info E-mail : contact@sevadham.info

प्रकाशक व मुद्रक : **श्री अरुण तिवारी,** मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.)
के.एच.–57 जैन आश्रम, रिंग रोड़, सराय काले खाँ, इंडियन ऑयल पेट्रोल पम्प के पीछे, पो. बो.–3240, नई दिल्ली–110013, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस–1 से मुद्रित।

संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया